

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६७

नित नवल परमेश्वर कापड़ि

६७

विदेह | गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय | खण्ड-६७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६७

‘नित नवल परमेश्वर कापड़ि’ : कथा, पद्य आ रंगमंचक समीक्षा

समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

साहित्यिक समीक्षा आ सम्पादकीय विवेचन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ६७ । समीक्षक आ सम्पादक :
आशीष अनचिन्हार ।

समीक्षाधीन पोथी : गजेन्द्र ठाकुर । 'नित नवल परमेश्वर कापडि' । २०२६ ।

प्रथम प्रकाशन : २०२६ । भाषा : मैथिली । मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च ।

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर । सर्वाधिकार सुरक्षित ।

सम्पादकीय भूमिका

गजेन्द्र ठाकुरक पुस्तक परमेश्वर कापडिक लोककथा, पौराणिक पुनर्व्याख्या, पद्य-
अनुवाद, सांस्कृतिक गद्य आ दू प्रमुख नाटकक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि ।
विषयक विस्तारक संग विधागत प्रश्न सेहो बदलैत अछि ।

प्रस्तुत पुनर्पाठ कथाक लोक-न्याय, पद्यक अर्थनिष्ठा, मंचीय लय आ राजनीतिक
नाटकक नैतिक द्वन्द्वकें अलग-अलग परखैत अछि । गजेन्द्रक व्याख्याक
प्रमाणशीलता आ सैद्धान्तिक विस्तारक मूल्याङ्कन एतय केन्द्रीय अछि ।

समालोचनाक मूल आधार गजेन्द्र ठाकुरक उक्त प्रकाशित अध्ययन अछि ।
पुस्तकमे उपस्थित साहित्यिक व्याख्याक मूल्याङ्कन ओकर अपन पाठ-विन्यास,
सन्दर्भ आ प्रमाणक अनुसार कएल गेल अछि । मूल पुस्तकक सम्पूर्ण पाठ एहि
खण्डमे पुनर्मुद्रित नहि अछि ।

विस्तृत अनुक्रमणिका : खण्ड ६७

१. परमेश्वर कापड़िपर गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक दृष्टि.....	४
२. लोककथा आ पुराणक नूतन अर्थ.....	४
३. लोकभाषाक जीवित नाटकीयता.....	५
४. कविता आ दार्शनिक अनुवाद.....	५
५. विविध गद्य : आत्मकथा, संस्कार आ सामाजिक प्रश्न.....	६
६. 'रेड-रेड' : हास्य, लय आ मंचक आत्मचेतना.....	७
७. 'गहन उगरास' : संघर्षक बहुस्वर.....	७
८. शास्त्रीय सन्दर्भ आ लोकजीवनक प्रमाण.....	८
९. दू नाटकक तुलनात्मक रचना-नीति.....	८
१०. साहित्यिक प्रतिरोध आ आलोचनाक उत्तरदायित्व.....	९
११. अन्तिम मूल्याङ्कन.....	९

१. परमेश्वर कापड़िपर गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक दृष्टि

‘नित नवल परमेश्वर कापड़ि’ गजेन्द्र ठाकुरक एकटा बहुविध साहित्यालोचनात्मक ग्रन्थ अछि। कापड़िक कथा, लोककथा, कविता, अनुवाद, सांस्कृतिक लेखन आ दू नाटक—‘रेड-रेड’ तथा ‘गहन उगरास’—क मूल्याङ्कन एहि पोथीमे संग उपस्थित अछि। रचना-क्षेत्रक एहि व्यापकता सँ आलोचकक सम्मुख एक कठिन प्रश्न आबैत अछि : की लोककथाक मौखिक न्याय, दार्शनिक अनुवादक अर्थनिष्ठा आ राजनीतिक नाटकक मंचीय क्रियाकें एके तराजूपर तौलल जा सकैत अछि? गजेन्द्रक अध्ययन एहि भिन्नता कें पूर्णतः मेटबैत नहि, यद्यपि कतिपय ठाम शास्त्रीय पदावलीक व्यापक प्रयोग सँ भेद धुंधला पडैत अछि।

पोथीक पाँच अध्याय क्रमशः कथा-खिस्सा, पद्य-रचना, विविध गद्य, ‘रेड-रेड’ आ ‘गहन उगरास’क अध्ययन करैत अछि। एहि क्रममे लोकक सहज अनुभवसँ सार्वजनिक राजनीतिक संघर्षक रंगमंच धरि आवाजाही अछि। कापड़िक साहित्यकें केन्द्रीयता दैत गजेन्द्र व्यक्तिगत लेखकीय स्वर, मिथिलाक सांस्कृतिक अनुभव आ जनकपुरक रंगपरम्पराक सम्बन्ध खोजैत छथि। आलोचनाक पद्धति बहुमुखी अछि; एकर विशेष लाभ ई जे उपेक्षित विधा सेहो विस्तृत विचार पबैत अछि।

एहि पुनर्पाठमे आशीष अनचिन्हार द्वारा गजेन्द्रक आलोचनाक अपन तर्क, पाठ-आधार आ निर्णयक परीक्षण कएल जा रहल अछि। कापड़िक मूल रचनाक पुनःप्रकाशन एहि अध्ययनक उद्देश्य नहि। कथाक कथा कहबाक बदला गजेन्द्र एहि कथासँ कोन साहित्यिक प्रश्न बनबैत छथि, से अधिक महत्त्वपूर्ण अछि।

२. लोककथा आ पुराणक नूतन अर्थ

कथा-अध्यायमे गजेन्द्र कापड़िक रचनाकें लोककथा, पौराणिक पुनर्व्याख्या, बोधकथा, कथा-खिस्सा आ कथा-काव्यक अलग कोटिमे राखैत छथि। ‘हनुमान नाम स्मरणके महिमा’, ‘लछमिनिजा कनिजा’, ‘यज्ञ-सीता’, ‘छौंड़ी-छौंड़ा सुदुम्न’, ‘हृदयबासी ईश्वर’ आ ‘दाम’ सन शीर्षक एके शिल्पक उदाहरण नहि। एहि वर्गीकरणक उपयोगिता ई अछि जे पाठक कथाक उद्देश्य आ स्रोतक भिन्नता पहिचानि सकैत छथि। लोककथा सामाजिक स्मृति सँ बनैत अछि; पौराणिक आख्यानक नूतन व्याख्या स्थापित संस्कारक विरोध अथवा पुनर्विचारक अवसर देइत अछि।

‘लछ्मिनिजा कनिजा’क प्रसंगमे स्त्री-पात्रक बुद्धि, पशुपक्षीक सहभागिता आ अभावसँ मुक्ति एक लोककथात्मक विन्यास बनबैत अछि। गजेन्द्र सामाजिक अपमान आ स्त्रीक सक्रिय निर्णयकें पाठक केन्द्र बनबैत छथि। ई महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कथाक अद्भुत घटना कें वास्तविक सामाजिक मुक्ति पद्धति मानब उचित नहि; लोककथामे इच्छा आ न्यायक कल्पना नाटकीय रूप लैत अछि। आलोचकक दायित्व एहि कल्पनाक ऐतिहासिक अनुभवसँ सम्बन्ध देखाएब, कल्पना कें प्रत्यक्ष इतिहास घोषित करब नहि।

‘यज्ञ-सीता’ आ ‘छौंड़ी-छौंड़ा सुद्युम्न’क पुनर्पाठ लिंग, सत्ता आ धार्मिक आख्यानक नैतिक रूढ़ि पर प्रश्न उठबैत अछि। गजेन्द्रक व्याख्या एहि साहसकें रेखांकित करैत अछि। मुदा पुराणक प्रसंगकें आजुक राजनीतिक शब्दावलीमे पढ़ैत काल स्रोतक स्वतन्त्र समय आ रचनाक अन्तर्विरोध दुनू सुरक्षित रह्य। एहन तनाव स्वीकार कएल जाए तँ पुनर्व्याख्या प्रामाणिक आलोचना बनैत अछि, तात्कालिक घोषणापत्र नहि।

३. लोकभाषाक जीवित नाटकीयता

कापडिक कथा-संसारक सबसँ पैघ आकर्षण लोकभाषाक जीवित वाक्यरचना अछि। गजेन्द्र ‘अगिलगगी’, ‘भुइल-विलाइ’, ‘पिनकले-फनकि’ जेकाँ अभिव्यक्तिक भाषिक वजन पर ध्यान दैत छथि। एहि शब्दसभकें केवल दुर्लभ शब्दक सूची न बुझब चाही। युग्मपद आ ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति कथनक गति, व्यंग्य आ पात्रक सामाजिक स्थिति बनबैत अछि। रंगमंचीय गद्यमे एहन शब्द बोलल गेल क्षणमे अपना संग देहभाषा आ स्थानीय स्मृति लऽ अबैत अछि।

शास्त्रीय रस, ध्वनि आ वक्रोक्तिक सहायता सँ लोकभाषाकें पढ़बाक गजेन्द्रक प्रयास रुचिकर अछि। मुदा अनेक सिद्धान्तक नामक अपेक्षा एक संवादक भाव-परिवर्तन, व्यंग्यक लक्ष्य आ उच्चारणक असरक विशिष्ट व्याख्या अधिक उपयोगी होएत। शास्त्रीय पदावली लोकभाषाकें ‘उन्नत’ करबाक साधन नहि; लोकभाषा अपन अधिकारसँ पहिनहि साहित्यिक अछि। आलोचकक काज ओकर विधागत सामर्थ्य स्पष्ट करब अछि।

४. कविता आ दार्शनिक अनुवाद

पद्य-अध्यायमे मौलिक दोहा-मुक्तक, ऋग्वेदक नासदीय सूक्तक मैथिली रूप ‘तत्त्वबोध’, संस्कृत श्लोकक भावानुवाद, बालगीत, गजल-सम्बन्धी आलोचना आ

कथा-काव्यक चर्चा अछि। एहि रूपसभक पाठ-अपेक्षा अलग अछि। 'तत्त्वबोध'मे सृष्टि-पूर्वक अवस्था, इच्छा आ ज्ञानक सीमा जेकाँ कठिन प्रश्न अछि। दार्शनिक अनुवादक उपलब्धि मात्र सरल शब्दमे कठिन वाक्य कहि देब नहि; प्रश्नवाचक संकोच आ मूलक अनिर्णय बचौने राखब आवश्यक अछि। गजेन्द्रक विवेचन एहि अर्थगत कठिनाईकेँ परखबाक अवसर दैत अछि।

बालगीत 'हमर जनकपुरधाम' वा 'सीता अवतार'क भाषा-शैलीकेँ दार्शनिक अनुवादक मापदण्डसँ नहि पढ़ल जाए। बालकक ग्रहणक्षमता, पुनरावृत्ति, दृश्यात्मकता आ गाबय योग्य क्रम एतय निर्णायक अछि। गजलमे बहर, रदीफ-काफिया आ शेरक स्वतन्त्र सम्पूर्णता आलोचनाक विषय अछि। गजेन्द्र एहि भिन्न विधाक परिचय दैत छथि; आगाँक अनुशीलनमे प्रत्येक विधाक स्वतन्त्र शास्त्रीय कसौटीक अधिक संयत उपयोग अपेक्षित अछि।

काव्यक मूल्याङ्कनमे रचनाकारक सामाजिक दृष्टिक समर्थन पर्याप्त नहि। छन्दभंग, अव्यवस्थित रूपक अथवा भाषिक जड़ता जँ उपस्थित अछि तँ ओकर उल्लेख सेहो चाही। एही आलोचनात्मक स्वतन्त्रता सँ साहित्यिक प्रशंसा विश्वसनीय बनैत अछि।

५. विविध गद्य : आत्मकथा, संस्कार आ सामाजिक प्रश्न

गजेन्द्रक तेसर अध्याय कापड़िक रचना-संसारक अनेक छोट गद्यरूपकेँ सामने अनैत अछि। 'पुण्यात्मा बाउ प्रसंग' जेकाँ पारिवारिक स्मृति, 'हमरो घरमे मैथिलीक बड़ मान' जेकाँ भाषा-अनुभव आ विवाह-संस्कार अथवा आयुर्वेद सम्बन्धी लेख एकहि लेखकीय जिज्ञासाक अलग रूप अछि। संस्मरणमे घटना आ स्मृतिक पुनर्रचना एक संग रहैत अछि; एकरा ऐतिहासिक प्रतिवेदनक निर्दोष प्रति मानब उचित नहि। सांस्कृतिक लेखमे परम्पराक सजीव परिचय आ आलोचनात्मक परीक्षणक भिन्न अपेक्षा अछि।

गजेन्द्रक चर्चा एहिसँ महत्वपूर्ण होइत अछि जे साहित्यकारक प्रतिष्ठित नाटकक बाहर उपस्थित गद्य सेहो ध्यान पवैत अछि। मुदा विविध विषयक एकहि अध्यायमे उपस्थितिक कारण आलोचनाक केन्द्रीय सूत्र कखनो ढीला पड़ि सकैत अछि। संस्मरणक निजी 'हम' आ दार्शनिक लेखनक सामान्य प्रतिपादनक दूरी स्पष्ट करब अध्यायक बौद्धिक एकता बढबैत।

६. 'रेड-रेड' : हास्य, लय आ मंचक आत्मचेतना

'रेड-रेड'क अध्ययनमे गजेन्द्र रंगभाषा, दृश्यखंड, आवाजक परिवर्तन, गीत-फकड़ा आ नाटकक भीतर नाटकक प्रविधि पर विचार करैत छथि। नाटकक शीर्षकमे रहस्य, गति आ बहुअर्थी संकेतक सम्भावना अछि। रंगमंच पर लिखित वाक्यक अर्थ अभिनेता कतेक गति, विराम आ देहभाषासँ कहैत छथि, तकर अनुसार बदलि सकैत अछि। गजेन्द्रक समीक्षाक सबल पक्ष ई अछि जे ओ मुद्रित संवादक सीमा सँ बाहर मंचीय प्रभावक कल्पना करैत छथि।

विभिन्न रंगसिद्धान्तक तुलनाक संग एक प्रश्न विशेष महत्त्व पबैत अछि : दृश्य टूटबाक कारण दर्शकक आलोचनात्मक दूरी बढ़ैत अछि कि कथाक संग लगाव कम होइत अछि? हास्य सामाजिक आलोचनाक धार बनेत कि केवल प्रदर्शनक मनोरंजन रहि जाएत? एहन प्रश्न वास्तविक मंचनक अनुभव सँ अधिक स्पष्ट होएत। गजेन्द्रक ग्रन्थ दृश्यविधानक संकेत दैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष अभिनयक प्रमाण सँ प्रत्येक निष्कर्ष जोड़ल नहि जा सकैत।

लोकगीत आ रूपकात्मक रंग-तरंगक उपयोगकें केवल मौलिक चमत्कार मानबाक बदला ओकर काज देखब चाही। जँ लय बदलि कऽ सत्ता-संबन्धक असहजता उद्घाटित होइत अछि, तँ संगीत आलोचनात्मक उपकरण बनेत अछि; जँ कथा निलम्बित होइत अछि, तँ ओही प्रविधि सीमा सेहो बनि सकैत अछि। गजेन्द्रक पाठ एहि द्वन्द्वकें गंभीरता सँ सोचबाक अवसर दैत अछि।

७. 'गहन उगरास' : संघर्षक बहुस्वर

'गहन उगरास'क समीक्षा गजेन्द्रक पुस्तकक सर्वाधिक प्रत्यक्ष राजनीतिक भाग अछि। फुलो खतबे, दुखिया सादा, सुभद्र मंडल, ज्वाला प्रसाद सिंह आ विद्यापति यादव जेकाँ पात्र सामाजिक अधिकार, हिंसक प्रतिरोध, राजनीति, पत्रकारिता आ जनसंगठनक भिन्न रास्ता प्रस्तुत करैत छथि। समीक्षाक असल काज पात्रक नामक संग जुड़ल विचारक समर्थन वा निषेध करब मात्र नहि; नाटक एहि विरोधी रास्ताकें दृश्य-क्रियामे कोना बदलैत अछि, से जाँचब अछि।

विशेष रूपसँ हिंसा आ अहिंसाक बहस नाटकमे नैतिक रूपँ जटिल रहबाक चाही। शोषणक उपस्थिति अन्याय स्पष्ट करैत अछि, मुदा ककर प्रतिरोध न्यायोचित अछि, केकर निर्णयक मूल्य की पड़ैत अछि आ निरपराधक स्थान कतय अछि—ई प्रश्न स्वतः हल नहि होइत। गजेन्द्रक बहुआयामी पद्धति एहि

विरोधक विभिन्न पक्ष देखबैत अछि। तथापि नाटकक पात्रकें विचारधाराक घोषणापत्र बनाकऽ पढलासँ मंचीय संघर्षक जीवित जटिलता घटि सकैत अछि। प्रतीक, दृश्य-विभाजन आ पत्रकारिताक पात्रक उपस्थिति नाटकमे सूचना आ संघर्षक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। मंच पर खबर कहबाक क्षण आ घटना घटबाक क्षण एक नहि; एहि अन्तरक रचनात्मक उपयोग निर्णायक अछि। गजेन्द्रक आलोचना एहि दिशामे प्रवेश करैत अछि, आ वास्तविक प्रस्तुति तथा पाठ्य रूपक अलग-अलग परीक्षणक माँग रखैत अछि।

८. शास्त्रीय सन्दर्भ आ लोकजीवनक प्रमाण

गजेन्द्र ठाकुरक कथासमीक्षामे भारतीय रसविचार, वक्रोक्ति, ध्वनि आ नव्य-न्यायक उल्लेख अनेक स्थलक व्याख्या दैत अछि। मुदा शास्त्रीय शब्दक तात्त्विक अर्थ आ स्थानीय मुहावराक व्यवहारक स्वर एकदम समान धरातलपर नहि। उदाहरणार्थ, लोककथा भीतरक हास्य दर्शकक सांस्कृतिक परिचयसँ बनैत अछि; ओकरा रसक नाम देलासँ भावक अनुभूति नामित भऽ सकैत अछि, पूरा विश्लेषित नहि। विभिन्न स्तरक दूरी मानि चलब अधिक सम्यक् आलोचना होएत।

पौराणिक आख्यानक आधुनिक पुनर्पाठमे सेहो पूर्वकथा, रचनाकारक बदलाव आ समीक्षकक वर्तमान अर्थ अलग चिन्हित होएब चाही। ‘यज्ञ-सीता’ वा ‘सुद्युम्न’ सम्बन्धी व्याख्या समाजक जटिल प्रश्न उठबैत अछि; मुदा पुराणक मूल कथनक प्रमाण बिना आधुनिक अर्थक सम्पूर्ण ऐतिहासिक पुष्टिक दावा नहि कएल जाए। एहि निष्ठासँ आलोचनाक साहस कम नहि, विश्वास बढ़ैत अछि।

९. दू नाटकक तुलनात्मक रचना-नीति

‘रेड-रेड’ आ ‘गहन उगरास’मे नाट्यक्रियाक केन्द्रीयता अलग अछि। पहिलमे लय, विडम्बना, आत्मसन्दर्भ आ दृश्यखंडक बनावट ध्यान खींचैत अछि; दोसरमे सार्वजनिक संघर्ष, राजनीतिक चुनाव आ सामाजिक अधिकारक टकराव प्रमुख अछि। गजेन्द्र दुनूक समीक्षा मे बहुतेक समान शास्त्रीय सन्दर्भ उपयोग करैत छथि। आलोचनात्मक दृष्टिएँ प्रश्न उठैत अछि, जे समान शब्दावली अलग नाटकक विशिष्ट काज केना स्पष्ट करैत अछि।

जखन लोकगीत मंचीय घटना बनेत, तखन ओकर सामूहिक स्मृति निर्णायक अछि; जखन समाचार सुनबेनिहार पात्र मंचपर आएत, तखन तथ्य आ मतक भेद

महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। नाटकक तनाव एही भेदक रचनात्मक उपयोगमे अछि। एहि प्रकारक स्वतंत्र शिल्पपरीक्षण नाटकक मूल्याङ्कनकें सामान्य सामाजिक प्रसंसा अथवा निन्दासँ अलग स्थापित करैत अछि।

१०. साहित्यिक प्रतिरोध आ आलोचनाक उत्तरदायित्व

कापडिक रचनामे लोककथा आ राजनीतिक नाटक बहुत अलग विश्व मानि पडैत अछि, मुदा दुनूकें जोड़निहार एक सूत्र सत्ता आ न्यायक प्रश्न अछि। लोककथाक अद्भुत सहायक वंचित पात्रक इच्छा पूरा करैत अछि; आधुनिक नाटकमे सामाजिक संघर्षक मानवीय मूल्य प्रत्यक्ष परखल जाइत अछि। गजेन्द्रक पोथी एहि भेदसहित सम्बन्ध देखबाक अवसर दैत अछि। एहन तुलना तखन उपयोगी अछि जखन ऐतिहासिक रूपक अन्तर अछूता रहय।

भाषाक स्तरपर सेहो नाट्यसंवाद आ कथा-वाचनक दूर महत्त्वपूर्ण अछि। लोकखिस्साक कथावाचक श्रोतासँ सीधा संबंध रखि सकैत अछि; राजनीतिक मंचक संवाद दर्शककें विचारक दूरी दऽ सकैत अछि। एहि प्रकारक विभागत अन्तरक व्यवस्थित पहचान पोथीकें आरो गम्भीर बनाओत।

११. अन्तिम मूल्याङ्कन

‘नित नवल परमेश्वर कापड़ि’क शक्ति अछि, विषयगत साहस आ उपेक्षित पाठक प्रति सजगता। गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनामे कथा, दार्शनिक पद्य आ नाटकक बहुआयामी अध्ययन कएल गेल अछि। सीमा अछि, कतिपय ठाम अनेक सिद्धान्तक एक संग प्रयोग आ मंचीय प्रमाणक अपेक्षाकृत कमी। जे निष्कर्ष पाठरूपसँ निकलैत अछि, ओकरा प्रत्यक्ष प्रदर्शनक निष्कर्ष नहि मानल जाए।

एहि पुस्तकक मूल्य गजेन्द्रक सर्वसम्मत निर्णयमे नहि, कापडिक साहित्यपर प्रश्न उठेबाक समृद्ध आधारमे अछि। आशीष अनचिन्हारक पुनर्पाठ एहि आधारक उपयोग करैत ई आग्रह करैत अछि जे मैथिली साहित्यक आलोचना लोकबोली, न्याय आ रंगशिल्पक स्वतंत्र परीक्षा करय। एहि दिशामे गजेन्द्रक पुस्तक आवश्यक आ आलोचनायोग्य दुनू अछि।

सन्दर्भ-सूची

ठाकुर, गजेन्द्र । नित नवल परमेश्वर कापड़ि । विदेह, २०२६ । (समीक्षाधीन मुख्य पोथी) ।

गजेन्द्र ठाकुरक उक्त ग्रन्थमे विचाराधीन प्रमुख रचनासभ :

१. परमेश्वर कापड़ि । कथा-खिस्सा आ पद्यरचनासभ (गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययनमे विवेचित) ।

२. परमेश्वर कापड़ि । रेड-रेड ।

३. परमेश्वर कापड़ि । गहन उगरास ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६७

कथा-खिस्सा आ लोकभाषाक रचनात्मकता
काव्य, अनुवाद आ व्यापक रचना-संसार
'रेड-रेड' आ 'गहन उगरास'क रंग-विमर्श
मैथिली साहित्यक स्रोताधारित समीक्षाक व्यापक प्रस्तुति।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह